विस्तृत रूपरेखा

I. छुटकारा (1-18)

A. इस्राएली लोग मिस्र के दासत्व में (1:1-22)

1. मिस्र में उनका प्रवेश और समृद्धि (1:1-7)
2. दबाए गए परन्तु नष्ट नहीं हुए (1:8-22)

B. उद्धारकर्ता: मूसा (2:1-4:26)

1. उसका जन्म और प्रारम्भिक जीवन (2:1-10)
2. छुटकारे का उसका प्रयास (2:11-15)
3. मिद्यान में उसका जीवन (2:16-22)
4. परमेश्वर को इस्राएलियों की पुकार (2:23-25)
5. परमेश्वर द्वारा मूसा की बुलाहट (3:1-4:17)
   a. मूसा की परमेश्वर के साथ भेंट (3:1-6)
   b. परमेश्वर की इच्छाएँ (3:7-9)
   c. परमेश्वर द्वारा प्रारम्भिक बुलाहट और मूसा की पहली प्रतिक्रिया: "मैं कौन हूँ?" (3:10-12)
   d. मूसा की दूसरी प्रतिक्रिया: "तू कौन है?" (3:13-15)
   e. छुटकारे का एक पूर्वावलोकन (3:16-22)
   f. मूसा की तीसरी प्रतिक्रिया: "वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे" (4:1-9)
   g. मूसा की चौथी प्रतिक्रिया: "मैं बोलने में निपुण नहीं हूँ" (4:10-12)
   h. मूसा की पाँचवी प्रतिक्रिया: "किसी और को भेज" (4:13-17)
6. परमेश्वर द्वारा बुलाहट पर मूसा की स्वीकृति और मिस्र के लिये उसका प्रस्थान (4:18-26)

C. प्रारम्भिक विफलता (4:27-6:13)

1. हारून, मूसा और लोग (4:27-31)
2. फिरौन से पहली विनती (5:1-21)
   a. मूसा का अनुरोध और फिरौन की नकारात्मक प्रतिक्रिया (5:1-4)
   b. अनुरोध के परिणाम: पुआल इकट्ठा करना (5:5-14)
   c. सरदारों का फ़िरौन से शिकायत (5:15-19)
   d. सरदारों का मूसा से शिकायत (5:20, 21)
3. परमेश्वर से मूसा की याचना और परमेश्वर की प्रतिक्रिया (5:22-7:7)
   a. परमेश्वर से मूसा की शिकायत (5:22, 23)
   b. परमेश्वर की प्रतिक्रिया: उसका नाम प्रगट हुआ और उसकी प्रतिज्ञा

का दोहराया जाना (6:1-8)
c. लोगों का सुनने से इनकार (6:9)
d. परमेश्वर की मूसा के लिये फिर से बुलाहट (6:10-13)

D. मूसा और हारून की वंशावली (6:14-27)

E. सफल प्रयास की शुरुवात (6:28-7:7)
1. फिरौन से बात करने के लिये मूसा के लिये परमेश्वर की आज्ञा (6:28-30)
2. सफलता का परमेश्वर का वायदा (7:1-7)

F. विपत्तियों के द्वारा छुटकारा (7:8-13:16)
1. लाठी का चमत्कार (7:8-13)
2. पहली नौ विपत्तियाँ (7:14-10:29)
a. जल का लहू बनना (7:14-25)
b. मेंढक (8:1-15)
c. कुटकियों का झुण्ड (8:16-19)
d. डांसों का झुण्ड (8:20-32)
e. पशुओं की मौत (9:1-7)
f. फोड़े (9:8-12)
g. ओलों की वर्षा (9:13-35)
h. टिड्डियाँ (10:1-20)
i. अन्धकार (10:21-29)
3. अन्तिम विपत्ति: पहिलौठों की मृत्यु (11:1-12:36)
a. विपत्ति की घोषणा (11:1-10)
b. फसह का आयोजन (12:1-28)
c. पहिलौठों की मृत्यु और इस्राएलियों को मुक्त करना (12:29-36)
4. निर्गमन की शुरुवात (12:37-13:16)
a. इस्राएलियों का मिस्र देश छोड़ना (12:37-42)
b. फसह के पर्व की विधि (12:43-51)
c पहिलौठों का अर्पण (13:1, 2)
d. मूसा का कहना (13:3-16)

G. लाल समुद्र के पार करना (13:17-15:21)
1. लाल समुद्र से होकर जाना (13:17-22)
2. लाल समुद्र पार करना (14:1-31)
a. फिरौन और उसकी सेना का पीछा करना (14:1-9)
b. इस्राएलियों की चिन्ता (14:10-14)
c. मूसा को परमेश्वर की शिक्षा (14:15-20)
d. इस्राएली लोग छुड़ाए गए (14:21-25)
e. फिरौन की सेना डूब गई (14:26-31)
3. छुटकारे का गीत (15:1-21)

H. सीनै की यात्रा (15:22-18:27)
   1. मारा में, कड़वे पानी का मीठे में बदलना (15:22-25)
   2. मारा में, वाचा का एक पूर्वावलोकन (15:25-27)
   3. सीनै के जंगल में, परमेश्वर द्वारा भोजन प्रदान किया जाना (16:1-36)
      a. इस्राएलियों की बकबक करना (16:1-3)
      b. मुहैया करने का परमेश्वर का वायदा (16:4-8)
      c. परमेश्वर की महिमा प्रगट करना (16:9-12)
      d. मन्ना और बटेरें (16:13-21)
      e. सब्त पर विश्राम करना (16:22-30)
      f. मन्ना रख छोड़ना (16:31-36)
   4. रपीदीम में चट्टान से पानी (17:1-7)
   5. रपीदीम में अमालेक पर जीत (17:8-16)
   6. जंगल में मूसा का यित्रो से भेंट (18:1-27)
      a. उसका मूसा के पास आना (18:1-7)
      b. परमेश्वर के छुटकारे पर उसका आनन्द (18:8-12)
      c. मूसा को उसकी सलाह (18:13-27)

II. वाचा (19-40)

A. परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा का गठन (19:1-24:18)
   1. वाचा का गठन (19:1-25)
      a. परमेश्वर की ओर से उनकी बुलाहट (19:1-9)
      b. परमेश्वर के लिये उनका अभिषेक (19:10-15)
      c. परमेश्वर के सामने उनका आना (19:16-25)
   2. दस आज्ञाएँ और इस्राएल की प्रतिक्रिया (20:1-21)
   3. वाचा की पुस्तक (20:22-23:33)
      a. प्रस्तावना: व्यवस्था का देनेवाला (20:22)
      b. परमेश्वर की आराधना से सम्बन्धित नियम (20:23-26)
      c. दासत्व से सम्बन्धित नियम (21:1-11)
      d. हिंसक कार्यों से सम्बन्धित नियम (21:12-27)
      e. बैलों से सम्बन्धित नियम (21:28-36)
      f. सम्पत्ति के विरुद्ध मुख्य अपराध (22:1-17)
      g. मूर्तिपूजा से सम्बन्धी अपराध (22:18-20)
      h. तरस के लिये आवश्यक नियम (22:21-27)
      i. परमेश्वर के आदर सम्बन्धी नियम (22:28-31)
      j. न्याय की माँग (23:1-9)
      k. विश्रामदिन को पवित्र मानना (23:10-13)
      l. तीन प्रमुख पर्व (23:14-17)
      m. बलिदानों से सम्बन्धित नियम (23:18, 19)

n. उपसंहार: प्रतिज्ञा की भूमि में प्रवेश (23:20-33)

4. वाचा का अनुमोदन (24:1-11)
5. नियम प्राप्त करना (24:12-18)

B. इस्राएल के लिये परमेश्वर की आराधना करने का पवित्रस्थान (25:1-40:38)

1. पवित्रस्थान के लिये योजनाएँ (25:1-31:18)
   a. निर्माण के लिये योगदान और भेंट (25:1-9)
   b. निर्माण के लिये निर्देश (25:10-27:21)
      (1) वाचा का सन्दूक (25:10-16)
      (2) प्रायश्चित का ढकना (25:17-22)
      (3) पवित्र मेज (25:23-30)
      (4) सोने की दीवट (25:31-40)
      (5) मिलापवाला तम्बू (26:1-37)
      (6) होमबली की वेदी (27:1-8)
      (7) आँगन (27:9-19)
      (8) दीपक के लिये तेल (27:20, 21)
   c. याजकों से सम्बन्धित निर्देश (28:1-29:46)
      (1) याजकों का पवित्र वस्त्र (28:1-43)
         (a) याजकों की पहचान (28:1-5)
         (b) एपोद और सुलैमानी पत्थर (28:6-14)
         (c) सीनाबन्द और उरीम और थुमिम (28:15-30)
         (d) बागे (28:31-35)
         (e) सोने की पट्टी, अंगरखा, पगड़ी और फीते (28:36-39)
         (f) अंगरखा, कमरबन्द, टोपियाँ और सनी की जाँघिया (28:40-43)
      (2) याजक पद के लिये अभिषेक (29:1-46)
         (a) याजक का वस्त्र (29:1-9)
         (b) अभिषेक समारोह (29:10-37)
         (c) निरन्तर दैनिक भेंट (29:38-42)
         (d) अभिषेक का प्रतिफल: परमेश्वर की उपस्थिति (29:43-46)
   d. निर्माण के लिये आगे के निर्देश (30:1-38)
      (1) धूप-वेदी (30:1-10)
      (2) कर का रुपया (30:11-16)
      (3) पीतल की हौदी (30:17-21)
      (4) अभिषेक का तेल (30:22-33)
      (5) पवित्र सुगन्ध द्रव्य (30:34-38)

e. निर्देशों का सारांश (31:1-18)
(1) निवास-स्थान के लिये कारीगर (31:1-11)
(2) सब्त मानने की रीति दोहराना (31:12-17)
(3) व्यवस्था का निष्कर्ष (31:18)

2. धर्म के विरुद्ध जाना और पुनर्स्थापना (32:1-34:35)
a. धर्म के विरुद्ध जाना: सोने का बछड़ा (32:1-35)
(1) इस्राएल का पाप: बछड़े की मूर्ति के सामने दण्डवत करना (32:1-6)
(2) परमेश्वर की प्रतिक्रिया: इस्राएल को नष्ट करने की चेतावनी (32:7-10)
(3) मूसा की मध्यस्थता (32:11-13)
(4) परमेश्वर का पुनर्विचार (32:14)
(5) इस्राएल की दण्ड (32:15-35)
(a) प्रदूषित पानी पीने (32:15-24)
(b) लेवियों द्वारा तीन हजार मारे गए (32:25-29)
(c) क्षमा और दण्ड (32:30-35)
b. पुनर्स्थापना: अपनी उपस्थिति का परमेश्वर का वायदा (33:1-23)
(1) लोगों की परमेश्वर से प्रस्थान की आज्ञा (33:1-6)
(2) आश्वासन कि परमेश्वर स्वयं प्रकट होगा (33:7-23)
c. पुनर्स्थापना: परमेश्वर का वाचा का नवीकरण (34:1-35)
(1) वाचा के नवीनीकरण करने की परमेश्वर की इच्छा (34:1-4)
(2) परमेश्वर के नाम और स्वभाव की घोषणा (34:5-9)
(3) वाचा का दोहराया जाना (34:10)
(4) फिर से नियम को जारी किया गया (34:11-26)
(a) किसी भी देश के साथ वाचा के विरुद्ध परमेश्वर की चेतावनी (34:11-17)
(b) आराधना में इस्राएल की जिम्मेदारी पर परमेश्वर का जोर (34:18-26)
(5) दस आज्ञाओं को दूसरी बार दिया गया (34:27, 28)
(6) परमेश्वर की भव्यता प्रदर्शित (34:29-35)

3. मिलापवाले तम्बू का निर्माण (35:1-39:43)
a. मिलापवाले तम्बू के निर्माण की तैयारी (35:1-36:7)
(1) सब्त को मानना (35:1-3)
(2) भेंट के लिये बुलाहट (35:4-9)
(3) मिलापवाले तम्बू के निर्माण के लिये विभिन्न वस्तुएँ (35:10-19)

(4) लोगों द्वारा भेंट लाना (35:20-29)
(5) निर्माण के लिये कारीगर (35:30-35)
(6) कारीगरों को लाना (36:1, 2)
(7) लोगों द्वारा बहुत सी भेंट (36:3-7)

b. निवासस्थान का निर्माण (36:8-38:31)
(1) निवासस्थान (36:8-38)
(2) वाचा का सन्दूक (37:1-5)
(3) प्रायश्चित्तवाला ढकना (37:6-9)
(4) पवित्र मेज (37:10-16)
(5) सोने का दीवट (37:17-24)
(6) धूप की वेदी (37:25-28)
(7) अभिषेक का तेल और धूप (37:29)
(8) होमवेदी (38:1-7)
(9) पीतल की हौदी (38:8)
(10) आँगन (38:9-20)
(11) निवासस्थान का लागत (38:21-31)
(a) अगुवे (38:21-23)
(b) दी गई राशि (38:24-31)

c. याजकीय वस्त्र तैयार करना (39:1-31)
(1) एपोद और सुलैमानी पत्थर (39:1-7)
(2) सीना बन्द (39:8-21)
(3) बागे (39:22-26)
(4) अंगरखे, पगड़ी, टोपियाँ, सनी की जाँघिया, और सोने की पट्टी (39:27-31)

d. निवासस्थान की प्रस्तुति (40:1-38)

4. निवासस्थान खड़े किए जाने और शुद्ध किए जाने के लिये दिशा-निर्देश (40:1-38)
a. निवासस्थान स्थापित किए जाने के लिये दिशा-निर्देश (40:1-8)
b. निवासस्थान और याजकों को शुद्ध किए जाने के दिशा-निर्देश (40:9-15)
c. निवासस्थान की स्थापना (40:16-33)
d. निवासस्थान में परमेश्वर का तेज भर जाना (40:34-38)